'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

# पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 अंक 5 19 मई, 2019 कुल पृष्ठ: 8 एक प्रति: रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

## मुख्यमंत्री जी व कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष बताएं?

**एक समाचार पत्र में छपे बयान के अनुसार राजस्थान के शिक्षा मंत्री जी का मानना है कि 'हम अपनी बच्चियों को जौहर करना नहीं सीखा सकते, यह कानूनी रूप से बैन है।' तो माननीय मुख्यमंत्री जी एवं कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष यह बताएं कि किस कानून में जौहर बैन है? साथ ही यह भी बताएं कि जौहर करना अनुकरणीय नहीं है तो स्त्री के समक्ष अपनी अस्मिता का संकट खड़ा होने पर निरुपाय होने की स्थिति में उसे आततायियों के समक्ष समर्पण कर जलालत भरे जीवन और गौरवपूर्ण आत्मोत्सर्ग में से किसे चुनना चाहिए?**

## स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान के प्रतीक प्रताप की जयंती

मेवाड़ जैसे छोटे से भू-भाग के शासक होने के बावजूद अपनी स्वाभिमानी जनता के प्रेम एवं समर्पण के बल पर लगभग संपूर्ण भारत के बादशाह एवं साम्राज्यवादी शासक अकबर को चुनौती देने वाले स्वाभिमानी व स्वतंत्रता के वैश्विक प्रतिमान महाराणा प्रताप की 479वीं जयंती ग्रिगेरियन कैलण्डर अनुसार 9 मई को विभिन्न स्थानों पर समारोह पूर्वक मनाई गई। नोखा के श्री करणी राजपूत छात्रावास में आयोजित समारोह को वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला, डूंगरसिंह रोड़ा, रामसिंह चरकड़ा, प्रतापसिंह पीपासर, करणीसिंह भेळू, करणीसिंह डेह, महिपालसिंह रायसर, प्रेमसिंह कांकरिया, चिमनसिंह मोरखाना आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने महाराणा प्रताप का जीवन परिचय देते हुए कहा कि महाराणा प्रताप किसी जाति, समाज या क्षेत्र के नायक नहीं बल्कि सभी स्वाभिमान एवं स्वतंत्रता प्रेमियों के आदर्श हैं। अतः ऐसे कार्यक्रमों में सभी वर्गों को शामिल करना चाहिए। संघ की हड़मत नगर बेलवा (शेरगढ़) शाखा में जयंती मनाई गई जिसमें प्रताप की तरह स्वयं को संघर्षों में तपाकर राष्ट्र सेवा के लिए तैयार होने का आह्वान किया गया। दुबई में कार्यरत युवाओं द्वारा पूज्य तनसिंह जी द्वारा लिखित लेख 'चेतक की समाधि से' का पठन किया गया। महाराणा प्रताप की जीवनी एवं संघर्ष के बारे में चर्चा की गई। (शेष पृष्ठ 3 पर)

### पीथल का प्रश्न व प्रताप का जवाब

पातल जो पतसाह, बोले मुख हंता बयण।
मिहर पछम दिस मंह, उगै कासप राव उत।।
पटकूं मूंछा पाण, कै पटकूं निजतन करद।
दीजै लिख दीवाण, इण दो महली बात इक।।
अ अ अ
तुरक कहासी मुख पतो, इण तन सूं इकलिंग।
उगै जाही उगसी, प्राची बीच पतंग।।
सुखी हूंत पीथल कमध, पटको मूंछा पाण।
पछटण है जे तो पतो, कलमा सिर में वाण।।
सांग मूंड सहसी सको, समजस जहर संवाद।
भड़ पीथल जीतो भलां, बैण तुरक सूं वाद।।

## महाराव शेखाजी का निर्वाण दिवस मनाया

नारी अस्मिता के लिए संघर्ष के पर्याय, शेखावाटी जनपद के संस्थापक एवं सांप्रदायिक सद्भाव के प्रतीक योद्धा महाराव शेखाजी का 531वां निर्वाण दिवस विभिन्न स्थानों पर 7 मई (अक्षय तृतीया) को श्रद्धापूर्वक मनाया गया। महाराव शेखाजी संस्थान जयपुर द्वारा प्रतिवर्ष की भांति सभी संस्थाओं की भागीदारी से सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। मुख्य कार्यक्रम उनकी निर्वाण स्थली रलावता में पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष राव राजेन्द्रसिंह शाहपुरा के आतिथ्य में रखा गया। उन्होंने शेखाजी को सर्व समाज कल्याण, धर्म निरपेक्षता, लोकतंत्र आदि मूल्यों का संवाहक बताया। (शेष पृष्ठ 5 पर)

## मीरा गर्ल्स स्कूल का वार्षिक उत्सव

सीकर में दुर्गा महिला विकास संस्थान द्वारा संचालित मीरा गर्ल्स स्कूल का वार्षिकोत्सव 'संस्कृति 2019' माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में 2 मई को मनाया गया। संस्थान के अध्यक्ष महावीर सिंह सरवड़ी की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में पूर्व विधायक प्रेमसिंह बाजोर, नगेन्द्रसिंह (प्रिंसीपल तोदी कॉलेज), पूरण कंवर (पूर्व उप जिला प्रमुख), गोरधन वर्मा (पूर्व विधायक), रतनसिंह नंगली आदि अतिथि के रूप में मौजूद रहे। समारोह में कक्षा वार उत्कृष्ट परिणाम देने वाली छात्राओं को सम्मानित किया गया। सत्र 2017-18 में गार्गी पुरस्कार प्राप्त करने वाली छात्राओं को भी सम्मानित किया गया। शीतल कंवर हुडील को स्टूडेंट ऑफ ईयर का सम्मान दिया गया। इसके अतिरिक्त सह शैक्षिक गतिविधियों की प्रतिभाओं एवं अभिभावकों का भी सम्मान किया गया। विद्यालय की छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

## एयर मार्शल राकेशसिंह भदौरिया बने उप सेना प्रमुख

एयर मार्शल राकेश सिंह भदौरिया पीवीएसएम, एवीएसएम, वीएम, एडीसी ने 1 मई 2019 को वायुसेना के उप प्रमुख के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है। एयर मार्शल भदौरिया सुपुत्र मास्टर वारंट आफिसर सूरजपाल सिंह निवासी बाह के कोरथ उ.प्र. राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के पूर्व कैडेट हैं। उन्हें 15 जून 1980 को भारतीय वायुसेना की फाइटर स्ट्रीम में कमीशन मिला था। एनडीए मेरिट में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर उन्हें प्रतिष्ठित स्वॉर्ड ऑफ ओनर से सम्मानित किया गया था। उनके पास 26 प्रकार के विमानों को उड़ाने का 4250 घंटे से अधिक का अनुभव है। आपने कमान एवं स्टाफ कॉलेज, बांग्लादेश से रक्षा अध्ययन में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम पूरा किया तथा मास्को में एयर अटैची भी रहे। फ्रांस के साथ राफेल विमानों की खरीद करने वाली टीम में एयर मार्शल भदौरिया भी शामिल थे। वायुसेना के उप प्रमुख का पद संभालने से पूर्व वे बैंगलोर स्थित भारतीय वायुसेना की प्रशिक्षण कमान के प्रमुख थे।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

# प्रणेता से प्रेरणा

**पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।**

**1977** के आम चुनाव में बाड़मेर जैसलमेर लोकसभा क्षेत्र से पूज्य तनसिंह जी के सामने खेतसिंह जी चौरड़िया ने कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा। चुनाव परिणाम में खेतसिंह जी 88000 वोटों से पराजित हो गए। यह समय देश में लगे आपातकाल के बाद का समय था। श्रीमती इंदिरा गांधी की सरकार द्वारा आपातकाल के दौरान की गई ज्यादतियों के विरोध में वोट पड़े और लगभग पूरे देश में कांग्रेस की हार हुई। हार के कारण कांग्रेस में श्रीमती इंदिरा गांधी का विरोध होने लगा और अपनी हार से खिझ कर वे इंदिराजी के विरोध में पार्टी छोड़ने लगे। पूज्य श्री को समाचार मिले कि खेतसिंह जी भी अपनी हार से उपजी निराशा के कारण पार्टी छोड़ने का मन बना रहे हैं। पूज्य श्री ने खेतसिंह जी को संदेश भिजवाया कि आपको पार्टी नहीं छोड़नी चाहिए। चुनावों में हार-जीत चलती रहती है। इस बार की हार अगली बार जीत में बदल सकती है लेकिन पार्टी छोड़ना आत्मघाती कदम होगा। वर्षों की मेहनत के बाद पार्टी में आपका स्थान बना है उसके लिए एवं उसे और मजबूत करने के लिए आवश्यक है कि आप इसी पार्टी में रहें। यह थी पूज्यश्री की अपने विरोधी के प्रति सद्भावना एवं राजनीतिक पार्टियों के प्रति दृष्टिकोण। उनका मानना था कि हमारा पहला चुनाव सोच विचार कर किया जाना चाहिए और एक बार चुनने के बाद उसे मजबूती से पकड़े रहना चाहिए। पूज्य श्री ने अपना पहला चुनाव राम राज्य परिषद से लड़ा। वे राजनीतिक पार्टी के रूप में रामराज्य परिषद के सदस्य बने और फिर किसी अन्य पार्टी के सक्रिय सदस्य नहीं बने। राम राज्य परिषद का अस्तित्व न बचने पर राजनीतिक मजबूरी के रूप में किसी अन्य दल का सहारा लिया तो भी संबद्ध सदस्य के रूप में लेकिन पूर्णकालिक सदस्य किसी भी अन्य दल के नहीं बने। यही सलाह उन्होंने अपने राजनीतिक विरोधी को भी दी। महापुरुष जैसा स्वयं के लिए सोचते हैं वैसा ही सभी के लिए सोचते हैं। सांसारिक व्यवहार में उनके लिए कोई विरोधी या सहयोगी हो सकता है लेकिन तात्विक रूप से वे सर्वत्र स्वयं का ही प्रसारण देखते हैं और जो सर्वत्र स्वयं को पाता है वह किसी का बुरा कैसे सोच सकता है? इसलिए उन्होंने सदैव सबका भला चाहा और जो भी संपर्क में आया उसका वास्तविक भला करने में ही संलग्न रहे।

# जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

(6) Certified Investment Banker : इन्वेस्टमेन्ट बैंकिंग फाइनेन्स सेक्टर का सबसे तेजी से बढ़ता क्षेत्र है और इस क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित तथा उच्च स्तरीय कैरियर निर्माण की अच्छी संभावनाएं हैं। इन्वेस्टमेन्ट बैंकिंग के क्षेत्र में प्रवेश करने हेतु इन्वेस्टमेन्ट बैंकिंग सर्टिफिकेशन कोर्स करना आवश्यक है। इस क्षेत्र में कैरियर बनाने के इच्छुक अभ्यर्थी में मजबूत गणितीय योग्यता, तर्कशक्ति तथा समस्या-समाधान कौशल (problem Solving Skill) होना आवश्यक है। Certified Investment Banking Operations Proffessional (CIBOP) Program दो माह की अवधि का एक सर्टिफिकेशन कोर्स है, जिसमें इन्वेस्टमेन्ट बैंक्स में कार्य करने हेतु आधारभूत तैयारी का अवसर मिलता है।

(7) Certified Stock Broker : स्टॉक ब्रोकर का प्रमुख कार्य मार्केट में स्टॉक्स की खरीद बिक्री से जुड़ा होता है। उन्हें स्टॉक मार्केट के उतार-चढ़ावों को समझकर उसी के अनुसार निर्णय करने होते हैं। स्टॉक ब्रोकर बनने के इच्छुक अभ्यर्थी में प्रतिपल बदलते वातावरण में स्वयं को समायोजित करने तथा त्वरित निर्णय करने की क्षमता होनी आवश्यक है, साथ ही उसका तकनीकी रूप से दक्ष होना भी आवश्यक है, क्योंकि स्टॉक मार्केट के सभी कार्य पूर्णतः कम्प्यूटरीकृत तथा अत्याधुनिक संचार साधनों पर निर्भर है। स्टॉक ब्रोकर बनने हेतु अभ्यर्थी को स्वयं को किसी स्टॉक एक्सचेंज पर रजिस्टर करना आवश्यक है। साथ ही उसे स्वयं को भारतीय विनिमय एवं प्रतिभूति बोर्ड (SEBI) के साथ भी रजिस्टर करना होता है। SEBI स्टॉक ब्रोकर्स के लिए प्रशासक निकाय के रूप में कार्य करता है। भारत के स्टॉक ब्रोकर कोर्स उपलब्ध करवाने वाले कुछ प्रमुख संस्थान निम्न लिखित हैं :

- Institure of Company Secreturies of India (ICSI), New Delhi.
- Institute of Capital Market Developement, New Delhi.
- All India Cenre for Capital Market Studies, Nashik.
- Mumbai Stock Exchange Training Institute.
- Institute of Financial and Investment Planning, Mumbai.

क्रमशः

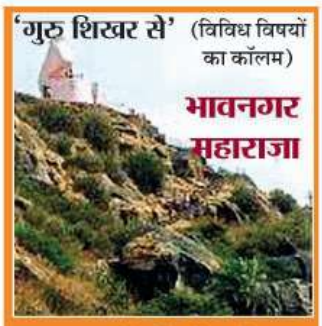


स्वरूपसिंह जिंझनियाली

**गुजरात** के काठियावाड़ की भावनगर बड़ी रियासत है जो खम्भात की खाड़ी और अरब सागर को छूती थी। यह गुहिल राजपूतों की रियासत है जो अपने आपको मेवाड़ के शिशोदिया (गहलोत) राजवंश का हिस्सा मानते हैं। ऐसा माना जाता है कि कन्नोज से आकर राठौड़ों के मारवाड़ के खेड़ (बालोतरा के पास बाड़मेर जिले में) पर आक्रमण करने के कारण यहां खेड़ के शासकों ने स्थानान्तरण कर काठियावाड़ में नए भावनगर राज्य की स्थापना की। मारवाड़ के रेगिस्तान में राठौड़ो के आक्रमण से अपना राज्य खोकर गोहिलो ने समुद्र किनारे सौराष्ट्र में आकर अपनी सुदृढ़ रियासत कायम की जो भारत की स्वतंत्रता तक उन्हीं के संरक्षण में फलती फूलती रही। इसी भावनगर रिसायत के अन्तिम महाराजा श्रीकृष्ण कुमार सिंह जी भावसिंह जी थे। इन्होंने 1919 से 1948 तक भावनगर पर राज्य किया। आपने अपने शासनकाल में प्रजा हित के अनेकों कार्य किए। श्रीकृष्णकुमार सिंह जी आजादी के बाद कुछ समय काठियावाड़ के राज प्रमुख भी रहे। 1948 में आपको मद्रास (अब तमिलनाडु) राज्य का प्रथम राज्यपाल (गवर्नर) बनने का गौरव मिला। आप 1948 से 1952 तक मद्रास के राज्यपाल रहे। श्रीकृष्णकुमार सिंह जी के राज्यकाल के जनहित के कई किस्से मशहूर हैं। उनके राज्य में कोई चोरी हो जाती और उसकी बरामदगी राज्य पुलिस नहीं करती तो राजकोष से पीड़ित पक्ष को मुआवजा दिया जाता था। राजकाज आजादी के बाद राजाओं के हाथ से निकल गए। परिस्थितियां बदल गई पर उन दिनों जनता के मन में राजाओं के प्रति प्रेम व सम्मान था-राज बदल गए पर रीत और प्रीत नहीं बदली थी। भावनगर के एक गांव में किसान (चौधरी पटेल) के घर के बाहर बन्धे बैलों को चोर ले गए। फरियाद पुलिस में हुई पर सुनवाई नहीं हुई। पर गांव के अनपढ़, सरल परन्तु राजा पर विश्वास करने वाले पटेल ने भावनगर राजमहल में जाकर राजा से इसकी शिकायत करनी चाही। वह राजमहल पहुंचा तो उसे बताया गया कि सुदूर दक्षिण में मद्रास में राजा साहब को गवर्नर बनाया गया है अब वे ज्यादातर वहां ही रहते हैं। अपने बैलों की बरामदगी की धुन की बात को लेकर उसने रेल द्वारा मद्रास जाने का निर्णय किया। वह मद्रास पहुंचा। राजभवन के सुरक्षा कर्मियों ने कृषक पटेल को अन्दर जाने से रोका परन्तु पटेल की गुजराती भाषा महाराजा श्रीकृष्ण कुमार सिंह के कानों में राजभवन के बगीचे में टहलते हुए पड़ी। उन्होंने पटेल को अन्दर आने देने का आदेश सुरक्षा कर्मियों को दिया। उसे जलपान आदि कराने के बाद आने का प्रयोजन पूछा। पटेल ने अपने बैलों की चोरी होने और उसकी बरामदगी नहीं होने का किस्सा सुनाया। पटेल सोच रहा था कि महाराजा अपने राजकोष से उसकी चोरी की भरपाई कर देंगे। उसे यह पता ही नहीं था कि राजाओं का राज चला गया है। महाराजा ने पटेल से पूछा कि तुम्हारे बैल कैसे चोरी हो गए। पटेल ने कहा हुकुम हम सब घर पर रात को सो रहे थे और चोर हमारे बैल चुरा ले गए। महाराजा ने पटेल के चेहरे कि निश्चितंतता को देखा और सोचा कि यह अभी भी यही सोच रहा है कि महाराजा के राज्य में निश्चिंत होकर सोते रहो। किसान के बैल अवश्य वे वापिस दिला देंगे। महाराज ने पटेल किसान से विनोद किया कि - 'पटेल भाई तुम तो नींद में सो रहे थे और तुम्हारे बैल चोरी हो गए परन्तु हम तो (राजा महाराजा) खुली आंखों से जग रहे थे और हमारा सब कुछ छिन गया।' महाराजा अपनी भावनगर रियासत को भारत गणतंत्र में शामिल करने वाले प्रथम पंक्ति के राजाओं में थे। महाराजा ने पटेल को मद्रास से भावनगर जाने का किराया देकर विदा किया और भावनगर के तात्कालीन तंत्र से बैल बरामद करवाने में सहायता करवाई। ऐसे थे महाराजा श्रीकृष्णकुमार सिंह जी जिनके मद्रास से राज्यपाल पद छोड़कर आने पर वहां की जनता फूट-फूट कर रोई थी।

# धरोहर बचाने को श्रमदान

जोधपुर के बालेसर में पुराने थाने के पास 80 वर्ष पुरानी धर्मशाला परिसर से अतिक्रमण हटाने एवं सार संभाल के लिए इंदा परिवार के युवाओं ने 5 मई को श्रमदान किया एवं ऐतिहासिक धरोहर को बचाने का संकल्प लिया। उल्लेखनीय है कि तात्कालिक इन्दा जागीरदारों ने धर्मशाला के लिए भूमि दान दी थी एवं जैन परिवारों ने वहां धर्मशाला बनवाई थी। राजपूत युवाओं के इस संकल्प को अन्य समाजों ने भी सराहा एवं आवश्यक मदद करने का आश्वासन दिया।

# संभाग स्तरीय दंपत्ति स्नेहमिलन

संघ के गुजरात क्षेत्र के महेसाणा एवं अहमदाबाद संभाग के महेसाणा, बनासकांठा, साबरकांठा, अहमदाबाद ग्रामीण एवं अहमदाबाद शहर के उत्तरदायी स्वयंसेवकों का दंपत्ति स्नेहमिलन 27 व 28 अप्रेल को महेसाणा जिले के मोढ़ेरा स्थित सूर्य मंदिर में संपन्न हुआ।

27 अप्रेल की शाम 6 बजे से प्रारम्भ हुए स्नेहमिलन में प्रथम दिन परिचय एवं कार्यक्रम का हेतु स्पष्ट किया गया। 28 अप्रेल को प्रातः दैनिक कार्यों से निवृत हो सूर्य मंदिर के दर्शन किए एवं उसके इतिहास से अवगत हुए। अहमदाबाद संभाग प्रमुख दीवान सिंह काणेटी ने उत्तरदायी स्वयंसेवक की जिम्मेदारी विषय पर बोलते हुए कहा कि शिविर हमारे लिए ज्ञान एवं क्रिया का स्रोत है। हम शिविरों में ज्ञान को आचरण में अभ्यास द्वारा सीखते हैं। उस ज्ञान एवं आचरण के प्रकाश में शाखाओं में हमारी वाणी, वर्तन व व्यवहार द्वारा प्रभाव पैदा होता है। लेकिन भाव के बिना यह सब अधूरा है। संघ का स्वयंसेवक स्वयं से जितना होता है, करता है लेकिन शिकायत नहीं करता। यही संघ के स्वयंसेवक का आदर्श है। द्वितीय सत्र में विक्रमसिंह कमाना ने 'संघ शिक्षण मेरे जीवन में' विषय पर वार्ता ली। उन्होंने संघ के अष्ट सूत्रीय कार्यक्रम को विस्तार से बताया एवं संघ शिक्षण को स्वयं के जीवन के साथ-साथ परिवार, रिश्तेदार एवं समाज में पहुंचाने का आह्वान किया। दोपहर एक से तीन बजे तक शिगोतर माताजी की सराय में मोढ़ेरा के क्षत्रिय बंधुओं एवं माताओं, बहनों के साथ बैठक हुई जिसमें वनराजसिंह भैसाणा, अजीतसिंह कुणघेर, करणसिंह कमाणा ने संघ का परिचय प्रस्तुत किया। शाम 3 बजे से 4 बजे तक वासड़ादादा मंदिर कालरी व बहुचर माता मंदिर के दर्शन किए। वहीं प्रार्थना के पश्चात् स्नेहमिलन संपन्न हुआ।

# नारी गांव में प्रा.प्र.शि. संपन्न

गुजरात के गोहिलवाड़ संभाग के खोडियार प्रांत के नारी गांव में 4 से 6 मई तक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। शिविर में गोहिलवाड़ प्रांत की 12 शाखाओं में 125 स्वयंसेवक प्रशिक्षणार्थ पहुंचे। शिविर का संचालन भागीरथसिंह सांडखाखरा ने मंगलसिंह धोलेरा, सुरुभा नारी, घनश्यामसिंह बावड़ी, हितुभा नारी आदि के सहयोग से किया। व्यवस्था का दायित्व नारी गांव के समाज बंधुओं ने संभाला एवं प्रतिवर्ष एक शिविर लगाने का आग्रह भी किया। 5 मई को शिविर में श्री गोहिलवाड़ राजपूत समाज के प्रमुख वासुदेवसिंह गोहिल अपने साथियों सहित पधारे।

## अपूर्वी चंदेला विश्व रैंकिंग में प्रथम

भारतीय निशानेबाज अपूर्वी चंदेला आई.एस.एस.एफ. द्वारा जारी विश्व रैंकिंग में महिलाओं के 10 मीटर एयर राइफल वर्ग में दुनियां की नंबर एक खिलाड़ी बन गई हैं। जयपुर में जन्मी 26 वर्षीय यह निशानेबाज 1926 रैंकिंग पोइंट लेकर शीर्ष पायदान पर पहुंची है।

# उदयपुर में युवा मार्ग दर्शन एवं संवाद कार्यशाला

उदयपुर के श्री भूपाल नोबल्स ऑल्ड बॉयज भवन में 3 मई को श्री क्षत्रिय युवक संघ के तत्वावधान में युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें उपस्थित विद्यार्थियों को लक्ष्य निर्धारित कर नियमित एवं निरन्तर मेहनत करने की प्रेरणा दी गई। कार्यक्रम में दलपतसिंह गुड़ा केशरसिंह, विमलेन्द्रसिंह राणावत, प्राची शेखावत, अर्जुनसिंह शेखावत, भगवतसिंह, विश्वेन्द्रराज सिंह आदि अधिकारियों ने विद्यार्थियों से संवाद स्थापित कर उनकी जिज्ञासा को शांत किया। कार्यक्रम का संचालन संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला ने किया।

पृष्ठ एक का शेष....

दुबई

**स्वतंत्रता...**

चर्चा में लखनपालसिंह भंवराणी, प्रेमसिंह बालेसर, पेपसिंह बापिणी, दिग्विजयसिंह केराला, प्रदीपसिंह कुमाना, रविसिंह मुआना, राजप्रतापसिंह चाचरू (पाकिस्तान) आदि ने अपने विचार रखे। जोधपुर के बापिणी कस्बे स्थित श्री मेहोजी स्टेडियम में जयंती मनाई गई। कार्यक्रम से पूर्व रैली व शोभायात्रा निकाली गई जो कस्बे के मुख्य मार्गों से होकर गुजरी, मार्ग में लोगों ने पुष्प एवं गुलाल की वर्षा की।

जोधपुर जिले के ही तापू गांव के स्वांगियाजी मंदिर में संघ के स्वयंसेवकों ने ग्रामवासियों के सहयोग से जयंती मनाई। वक्ताओं ने प्रताप के जीवन के सिद्धान्तों व आदर्शों को आत्मसात करने की आवश्यकता बताई। इसी प्रकार देचु में भी ग्रामवासियों द्वारा ने जयंती मनाई। जोधपुर स्थित श्री हणवंत राजपूत छात्रावास शाखा में जयंती मनाई गई जिसमें सवाईसिंह सारूंडा, मोतीसिंह फलसूण्ड, गुलाबसिंह बेदु आदि ने महाराणा प्रताप के व्यक्तित्व पर अपनी बात कही। मुरादाबाद (उत्तरप्रदेश) में विभिन्न संगठनों द्वारा जयंती मनाई गई। अखिल भारतीय क्षत्रिय विकास मंच द्वारा रामलीला मैदान से महाराणा प्रताप चौक तक रैली निकाली गई। मुरादाबाद में ही राजपूताना क्षत्रिय सभा द्वारा प्रताप चौक पर 479 दीपक जलाकर उनके आदर्श व्यक्तित्व को नमन किया। इसी प्रकार यहां भारत स्वाभिमान ट्रस्ट द्वारा भी जयंती मनाई गई। दिल्ली में संघ की साप्ताहिक शाखा के स्वयंसेवकों द्वारा दिल्ली प्रांत का जयंती कार्यक्रम रखा गया। कश्मीरी गेट स्थित महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर इस अवसर पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। पूज्य तनसिंह जी रचित 'बे दर्द ना बन रे' सहगीत गाया गया एवं इसी के आलोक में प्रताप के जीवन पर चर्चा की गई।

दिल्ली

संघ के मुंबई प्रांत की विभिन्न शाखाओं ने मंडलवार प्रताप जयंती मनाई। दक्षिण मंडल की तनेराज शाखा के कार्यक्रम में मंडल की शाखाओं के साथ सूरत प्रांत प्रमुख खेतसिंह चांदेसरा भी शामिल हुए। उत्तर मुंबई की मंडल की शाखाओं ने वरिष्ठ स्वयंसेवक पाबूदानसिंह दौलतपुरा एवं हार्बर मंडल की शाखाओं ने संभाग प्रमुख नीरसिंह सिंघाणा के सानिध्य में जयंती मनाई। स्वयंसेवकों के साथ -साथ स्थानीय समाज बंधु भी कार्यक्रमों में शामिल हुए। जालोर जिले के रानीवाड़ा में इस अवसर पर महाराणा प्रताप की मूर्ति पर माल्यार्पण किया गया।

बेलवा

## संपादकीय Column

# विरोध की विध्वंशात्मक नकारात्मकता

विरोध एक नकारात्मक सत्ता है। नकारात्मकता से सृजन संभव नहीं है। सृजनात्मकता सकारात्मकता से ही संभव है। विरोध का प्रादुर्भाव अस्वीकार्यता से होता है। अस्वीकार करना नकारना ही है। हम जिसे अस्वीकार करते हैं उसे नकारने के लिए ही उसका विरोध करते हैं। विरोध में जो है उसे मिटाने का भाव होता है। जिसे अस्वीकार करते हैं उसे मिटाना चाहते हैं और इस प्रकार विरोध सदैव विध्वंश का प्रेरक होता है। विश्व में पनपी विजातीय संस्कृतियां विरोध के कारण पनपी इसीलिए उनके विकास में विध्वंस की छाया बनी रही। क्योंकि पादुर्भाव का कारण ही विरोध था इसलिए बड़े-बड़े पुस्तकालय जलाए गए। बड़े-बड़े हंसते खेलते शहरों को श्मसान बना दिया गया। कत्लेआम कर मानवता के दैवीय अस्तित्व को नेस्तनाबूत करने का प्रयास किया गया समकालीन विश्व इतिहास में पनपी लाल क्रांति भी इसी नकारात्मकता का परिणाम थी। हिटलर का फासीवाद या मुसोलिनी का नाजीवाद भी इसी नकारात्मकता का उदाहरण है तो वर्तमान विश्व का आतंकवाद भी अपनी विरोध की मानसिकता के कारण विध्वंश का पर्याय बना हुआ है। विरोध के कारण ही कट्टरता पनपती है और कट्टरता ही उचित अनुचित के विवेकपूर्ण निर्णय पर पर्दा डालकर विध्वंश को प्रोत्साहित करती है। लेकिन भारत का आदर्श कभी भी विरोध नहीं रहा। इसलिए यहां विध्वंश को कभी भी प्रधानता नहीं मिली। भारत में महाभारत जैसे भयंकर युद्ध में भी सृजनात्मकता ने अपने आपको विदा नहीं होने दिया और वास्वत में तो उस महासंग्राम का उद्देश्य ही धर्म के शासन का सृजन ही था। श्रीराम की लंका विजय जहां रावण के विनाश के साथ समाप्त हो जाती है वहीं विरोध की मानसिकता वाले आक्रांताओं की युद्ध पिपासा विजित क्षेत्र में भयंकर रक्तपात एवं निरीह प्राणियों के सामूहिक संहार से भी समाप्त नहीं हुई क्योंकि उनकी प्रेरक शक्ति विभीषण जैसे धर्मप्रेमी व्यक्ति को शासक बनाना या अधर्मपूर्वक हरण की गई सीता को छुड़ाना नहीं बल्कि अपनी युद्ध पिपासा, भोगलिप्सा या राज्य पिपासा को शांत करना था और उसमें आने वाले हर अवरोध का विरोध स्वरूप विश्वंस करना था। यही कारण है कि भारत सदैव से संसार का मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्रोत रहा। लेकिन भारत का विजातीय लोगों से संसर्ग भी अपना प्रभाव छोड़े बिना नहीं रह पाया। उसी संसर्ग का परिणाम है कि हम भी नकारात्मक दृष्टिकोण के प्रभाव में आए हैं। इसी दृष्टिकोण के कारण सृजन की अपनी उत्कृष्ट परम्परा को छोड़कर विरोध को ही प्रबल साधन मान बैठे हैं। विरोध कभी रचनात्मक नहीं होता क्योंकि वह नकारात्मकता के हलाहल में जन्म लेता है। इसी हलाहल के प्रभाव में भारत आया और भारत में रहने वाले लोग आए। इसी नकारात्मक प्रेरणा के राजपूत शिकार हुए और राजनीतिज्ञों ने इसे हवा देकर समाज में हमारे विरोध में वातावरण तैयार किया। कालांतर में हम स्वयं इसी चपेट में आए और आजकल सोशल मीडिया में हमारे लोगों के व्यवहार को देखकर तो लगता है कि अब तो विरोध करना ही सामाजिकता रह गई है। जो किसी का जितना अधिक विरोध कर पाता है या अपने साथ विरोध करने वाले जुटा पाता है वही सोशल मीडिया पर सक्रिय लोगों के लिए सर्वाधिक सामाजिक हो गया है। सोशल मीडिया क्यों कि समाज के बड़े वर्ग को कवर करता है। इसलिए वह पूरा वर्ग भी इस विरोध को विध्वंशात्मक सोच से प्रभावित होता है। इसी सोच का परिणाम है कि राजनीति में हमारा लक्ष्य जीतना नहीं बल्कि हराना बन गया है। किसी को जीताकर हम उतने प्रसन्न नहीं होते जितना किसी को हराकर होते हैं। समाज के तथाकथित योद्धा जहां हमारे पक्ष के व्यक्ति को जीताना होता है वहां तो उदासीन रहते है लेकिन ज्यों ही किसी को हराने का आह्वान करना होता है एकाएक प्रकट हो जाते हैं। पूरा प्रयास यही करते हैं कि जिसे वे हराना चाहते हैं उसे हराने का पूरा श्रेय उन्हें ही मिले और इस श्रेय में किसी प्रकार का बंटवारा न हो। यही नकारात्मकता है। इस नकारात्मकता में विध्वंश लक्ष्य रह जाता है, मिटाना ही लक्ष्य रह जाता है और सृजन के नाम पर शुन्य ही हासिल होता है। किसी को हराने के आह्वान की अपेक्षा यदि मजबूत विकल्प की जीताने का आह्वान किया जाए तो भी परिणाम स्वरूप वह तो हार ही जाता है जिसे हराना है लेकिन इसमें उस तमोगुणीय अहंकार की तुष्टि नहीं होती जिसे किसी को हराकर संतुष्टि मिलती है। आजकल इसी तमोगुणीय संतुष्टि के लिए खूंटे तोड़े जाते हैं। राजनीति में हमारे समाज के साथ यह विडंबना ही है कि राजस्थान की राजनीति में हम विरोध स्वरूप ही सक्रिय हुए हैं और वह विरोध आज तक जारी है। विरोध विध्वंश को हो आमंत्रण देता है उससे किसी प्रकार का सृजन संभव नहीं इसलिए हमारे साथ भी यह होता है कि कल तक हम जिसका विरोध कर हराने का श्रेय लेते हैं वह तो हमारे विरोध में होता ही है साथ ही जीतने वाला भी हमे गांठता नहीं है और कालांतर में उपेक्षा की शिकायत कर हम उसके भी विरोधी बन जाते हैं और इस प्रकार विरोध ही हमारी नीयति बन जाती है। लोकतंत्र में जिनकी नीयति विरोध बन जाता है, लोग उनके तमोगुणीय अहंकार को तुष्ट करने के लिए डरने का नाटक जरूर कर लेते हैं लेकिन वास्तव में उनका वह डरने का नाटक बला टालने जैसा होता है और विचार करें कि जिसे बला माना जाए लोग उसके साथ कैसे व्यवहार करेंगे। इसलिए यदि बला बनने से बचना है, लोगों के सच्चे समर्थन को हासिल करना है तो अपने तमोगुणीय अहंकार को मारकर उसे सतोगुणीय स्वाभिमान बनाइए। बात-बात पर किसी को हराने या देख लेने की धमकी देने की अपेक्षा अपने आपकी सतोगुणीय शक्ति को जागृत कर मजबूत बनें ताकि किसी की हमारे हितों पर कुठाराघात करने की हिम्मत होने से पहले उसे कई बार सोचने को मजबूर होना पड़े। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसीलिए हर छोटी-मोटी बात पर आक्रमक प्रतिक्रिया देने की अपेक्षा निरन्तर सृजन में ही संलग्न रह अपनी ऊर्जा का सदुपयोग करता है ताकि हमारा सतोगुणीय स्वरूप उभरे और हमारा वह सतोगुण इस संसार का दिशादर्शक बने।

## खरी-खरी...

# शासन के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न

शासन के संचालन के लिए साम, दाम, दंड और भेद चार साधनों का उल्लेख आता है। जिस शासन व्यवस्था में चारों का समुचित सदुपयोग होता है वह अबाध गति से अपने राज्य के सर्वतोमुखी कल्याण में संलग्न रहती है। इन चारों का अपना अपना महत्व है लेकिन इनमें दंड प्रकट रूप में प्रत्यक्ष प्रभाव पैदा करता है। दंड का समुचित सदुपयोग व्यवस्था भंग करने वाले अपराधियों में शासन का भय पैदा करता है और उस भय एवं खौफ के कारण वे अपराध करने से पहले अनेक बार विचार अवश्य करते हैं। जब यह खौफ एवं भय समाप्त हो जाता है तो शासन के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिह्न लग जाता है। ऐसा ही प्रश्न चिह्न है राजस्थान के अलवर जिले के थानागाजी क्षेत्र की विगत दिनों की घटना। एक युवा दंपति को कुछ बदमाश लोग रोकते हैं, मारपीट करते हैं और पति के समक्ष ही पत्नी के साथ सामूहिक दुष्कर्म करते है। यहां तक की घटना तो अपराध तक ही सीमित रहती है। अपराधी मानसिकता के लोगों का आपराधिक कृत्य ही नजर आता है लेकिन इससे आगे का घटनाक्रम शासन के अस्तित्व पर ही प्रश्न खड़ा करता है। वे अपराधी इस घटना का वीडियो बनाते हैं, फोटो खींचते हैं और फिर पीड़ित पक्ष से मात्र 10,000 रुपए के लिए सौदेबाजी करते हैं कि हमें पैसे पहुंचाओ अन्यथा वीडियो वायरल कर देंगे। उनका यह बेखौफ व्यवहार शासन के दंड नामक साधन की पूर्ण विफलता का द्योतक है। अपराध प्रायः हर शासन व्यवस्था में होते है। सामान्यतः यह माना भी जाता है कि कुछ बिरले उदाहरणों को छोड़कर कोई भी शासन व्यवस्था वर्तमान समय के जटिल संरचना वाले समाज को पूर्णतया अपराध मुक्त रखने का दावा नहीं कर सकती लेकिन जिस व्यवस्था में साधारण से अपराधियों में भी इस प्रकार का बेखौफपना आ जाए कि वे अपराध करने के पश्चात स्वयं को छिपाने की अपेक्षा उस अपराध की ही सौदेबाजी करने लगें तो उस व्यवस्था को व्यवस्था कहना भी एक तरह से अतिश्योक्ति ही है। हर व्यवस्था में अपराधी अपराध करने के बाद स्वयं को छिपाने की कोशिस करता है, लेकिन यहां तो अपराधी स्वयं ही अपनी फोटो व वीडियो सोशल मीडिया में वायरल कर रहा है इससे क्या यह माना जा सकता है कि उन अपराधियों के लिए शासन नाम की किसी व्यवस्था का अस्तित्व है? यह स्थिति घोर अराजकता एवं व्यवस्था की पूर्ण रूपेण असफलता की द्योतक है लेकिन क्या इस स्थिति के लिए शासन का कोई एक अंग उत्तरदायी है? कानून व्यवस्था का काम राज्य के गृह मंत्रालय के पास होता है जिसे वह पुलिस प्रशासन के माध्यम से लागू करवाता है लेकिन क्या यह घटना केवल पुलिस प्रशासन की असफलता ही है? पुलिस प्रशासन क्या इस व्यवस्था में स्वतंत्र रूप से काम कर पाता है? पुलिस प्रशासन की क्या स्थिति है उसका भी इन्हीं दिनों का एक उदाहरण अखबारों में छपा है। चुनाव के दौरान एक मतदान केन्द्र पर नियुक्त एक महिला सुरक्षा कर्मी द्वारा अपने क्षेत्र के सेक्टर अधिकारी के निर्देश पर मतदान केन्द्र में कैमरे सहित लोगों को प्रवेश से रोकना उस समय भारी पड़ गया जब उनका सामना हमारे राज्य के एक माननीय केबीनेट मंत्री से हो गया। उन महिला पुलिस कर्मी द्वारा जब सेक्टर अधिकारी के निर्देश का हवाला दिया गया तब मंत्री जी का जवाब था कि कौन होता है सेक्टर अधिकारी। पता नहीं मैं केबीनेट मंत्री हूं। अब उन मंत्री जी को यह समझाने की हिम्मत कौन करे कि चुनाव के दौरान भारतीय संविधान ने चुनाव आयोग को सर्वेसर्वा बनाया है। सेक्टर अधिकारी उस आयोग का प्रतिनिधि है और चुनाव के दौरान चुनावी कार्य में आपकी केबीनेट मिनिस्टरी स्थिगित रहती है लेकिन जहां प्रशासन अल्प समय के लिए सत्ता में आने वाले लोगों की मशीनरी बनकर रह जाता है वहां प्रशासन नेताओं का पिछलगु हो जाता है और नेता लोग आजकल किन-किन लोगों के पिछलग्गू हैं यह हम सब जानते हैं।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

## शिविर सूचना

| क्र.सं. | शिविर | समय | स्थान मार्ग आदि |
|---|---|---|---|
| 1. | मा.प्र.शि. (बालिका) | 31.05.2019 से 06.06.2019 तक | **जयमल कोट, पुष्कर (अजमेर)।** कम से कम 8वीं पास और पूर्व में शिविर की हुई बालिकाएं ही आ सकती हैं। गणवेश लेकर आएं। |
| 2. | मिलन शिविर | 07.06.2019 से 10.06.2019 तक | भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट द्वारा संचालित आलोक आश्रम, गेहूं रोड़, बाड़मेर। • आमंत्रित स्वयंसेवक ही आ सकेंगे। • आमंत्रित स्वयंसेवक पूरा शिविर न कर सकें तो कम-से-कम दो दिन के लिए आ सकते हैं। |

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हो तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

**दीपसिंह बैण्यांकाबास,** शिविर कार्यालय प्रमुख

## चन्द्रगुप्त मौर्य

गतांक से आगे

**नन्दों** की शक्ति को पूर्ण रूप से नष्ट करने के बाद लगभग 321 ई.पू. में चन्द्रगुप्त मगध का शासक बना। केन्द्रीय सत्ता के अभाव में देश में अव्यवस्था फैली हुई थी, राजनीतिक एकता के अभाव में सदैव बाहरी आक्रमण का खतरा बना रहता था। इसलिए चन्द्रगुप्त ने छोटे-छोटे राज्यों में विकेन्द्रित शक्ति को केन्द्रित करने का कार्य प्रारम्भ किया और इस कार्य के लिए चन्द्रगुप्त ने दिग्विजय की नीति का अनुसरण किया। पंजाब और सिंध का प्रदेश तो मगध पर अधिकार से पूर्व ही चन्द्रगुप्त के आधिपत्य में था। रुद्रदामन के गिरनार अभिलेख से जानकारी मिलती है कि पश्चिमी भारत में सौराष्ट्र तक के प्रदेश को जीत कर चन्द्रगुप्त ने अपने प्रत्यक्ष शासन में लिया था। इसके उपरान्त चन्द्रगुप्त ने सोपारा (महाराष्ट्र) को भी विजित कर अपने साम्राज्य में मिला लिया। तमिल ग्रन्थों व जैन स्त्रोतों से ज्ञात होता है कि दक्षिण भारत में कर्णाटक व आंध्रप्रदेश तक का प्रदेश चन्द्रगुप्त द्वारा शासित था। इन सभी प्रदेशों को जीत कर चन्द्रगुप्त ने एक कुशल और मजबूत प्रशासनिक तन्त्र स्थापित किया। सिकन्दर की मृत्यु के बाद उसके सेनापतियों में आपसी संघर्ष छिड़ गया। इन सब में से सेल्यूकस योग्य निकला। 305 ई.पू. तक उसने पश्चिम एशिया में अपनी शक्ति इतनी संगठित कर ली कि अब वह सिकन्दर द्वारा विजित भारतीय क्षेत्रों पर पुनः स्वामित्व स्थापित करने का स्वप्न देखने लगा। परन्तु इस समय का भारत सिकन्दर कालीन भारत से पूर्णतया भिन्न था, सेल्यूकस का सामना छोटे-छोटे राज्यों के शासकों से नहीं वरन् संगठित भारत के महान सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य से था। सेल्यूकस और चन्द्रगुप्त के मध्य यह युद्ध सिन्धु नदी के किनारे पर हुआ था। चन्द्रगुप्त की शक्तिशाली सेना और चन्द्रगुप्त के युद्ध कौशल के आगे सेल्यूकस को पराजय स्वीकार करनी पड़ी। पराजित सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त से संधि की प्रार्थना की जिसे चन्द्रगुप्त ने स्वीकार कर लिया। इस संधि के अनुसार सेल्यूकस ने कान्धार, काबुल, ऐरया (हेरात) व जेड्रासिया का प्रदेश चन्द्रगुप्त को भेंट स्वरूप दिया। यूनानी लेखकों के विवरणानुसार सेल्यूकस ने अपनी पुत्री हेलना का विवाह चन्द्रगुप्त से किया। अब चन्द्रगुप्त का विशाल साम्राज्य उत्तर-पश्चिम में ईरान की सीमा से लेकर दक्षिण में कर्णाटक, आंध्रप्रदेश तक विस्तारित था वहीं पूर्व में मगध से लेकर पश्चिम में सौराष्ट्र, सोपारा तक फैला हुआ था। चन्द्रगुप्त के समय हिन्दुकश पर्वत भारत की वैज्ञानिक सीमा थी। इस विशाल साम्राज्य की राजधानी पाटलीपुत्र थी। चन्द्रगुप्त एक महान विजेता, साम्राज्य निर्माता व कुशल प्रशासक था। चन्द्रगुप्त द्वारा अपनाई गई प्रशासनिक व्यवस्था कालान्तर की सभी भारतीय प्रशासनिक व्यवस्थाओं का आधार थी। चन्द्रगुप्त निपुण व एक लोकोपकारी शासन व्यवस्था का निर्माता था। वह प्रजा की समास्याओं के निराकरण व उन्हें न्याय प्रदान करने के लिए सदैव उपलब्ध रहता था। एक साधारण परिवार में जन्म लेकर भी अपनी योग्यता से चन्द्रगुप्त भारत का महान सार्वभौम सम्राट बना। जैन परम्पराओं के अनुसार चन्द्रगुप्त ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में जैन धर्म को अपना लिया था और श्रवण बेलगोला (मैसूर) में तपस्या करते हुए उपवास पद्धति से अपने प्राण त्याग दिए।

**पृष्ठ 4 का शेष....** हमारी... ऐसे में बाहुबलियों के पिछलग्गू, धनबलियों के पिछलग्गू एवं जनबलियों के पिछलग्गू नेताओं द्वारा संचालित प्रशासन किस प्रकार की व्यवस्था संभालेगा यह हम सब समझते हैं। और जो हम सब जानते हैं उसी का प्रकट स्वरूप है थानागाजी क्षेत्र की घटना। लेकिन हम सब जब तक जानकर बैठे रहेंगे, जानकर अनजान बने रहेंगे, जानकर मन मसोसते रहेंगे, जानकर भी मजबूर बने रहेंगे तब तक अपराधियों की यह हौसला बुलंदी यूं ही जारी रहेगी और जब तक यह हौसले बुलंदी रहेगी तब तक अराजकता के नंगे नाच को रोकना असंभव है। इन सब बातों का एक मात्र उपाय हमारा खड़ा होना है, समाज की सद्वृत्तियों को संगठित करना है, मजबूत करना है ताकि शासन के निर्माता तामसिम वृत्तियों का पिछलग्गू बनना छोड़ कर सद्वृत्तियों के पिछलग्गू बन सकें। व्यवस्था कोई गलत या सही नहीं होती बल्कि उसके नियामक तत्व सही या गलत होते हैं। यदि नियामक सही हो तो खराब से खराब व्यवस्था भी श्रेष्ठ परिणाम दे सकती है।

**पृष्ठ एक का शेष....**

**महाराव...** सीकर जिला मुख्यालय पर राजपूत महासभा सीकर द्वारा कार्यक्रम रखा गया। महाराव शेखाजी संस्थान चुरू द्वारा डॉ. अमरसिंह शेखावत, प्रो. भंवरसिंह सामौर, रामसिंह बीका, नंदलालसिंह आदि के आतिथ्य में चुरू में कार्यक्रम रखा गया। सभी ने उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने की बात कही। झुंझुनूं जिला मुख्यालय स्थित शार्दुल कॉलोनी में कार्यक्रम रखा गया जिसमें महावीरसिंह देरसर, जगदीशसिंह नांद, श्यामसिंह बगड़, यशवर्धनसिंह आदि ने उनके जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। वक्ताओं ने बताया कि उन्होंने 12 वर्ष की उम्र में राज्य संभाला। 4 गांवों की जागीर को 360 गांवों की बनाया।

**एयर मार्शल...** सैनिक परिवार से संबंध रखने वाले एयर मार्शल आर.के. सिंह भदौरिया हमारे समाज से पहले अधिकारी हैं जिन्हें इस पद पर पहुंचने का गौरव प्राप्त हुआ है। उन्हें परम विशिष्ट सेवा मैडल, अति विशिष्ट सेवा मैडल और वायुसेना मैडल से नवाजा जा चुका है। समाज उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। - **हिम्मतसिंह पीह**

## प्रतिभाएं

**अनन्यासिंह** : अनन्यासिंह (सुपुत्री नमितासिंह एवं विक्रमसिंह) : संघ के दिवंगत स्वयंसेवक श्री जगमालसिंह जी करणीसर की सुपौत्री एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक गजेन्द्र सिंह सरवड़ी की दोहिती है। अनन्या ने आईसीएसई बोर्ड की दसवीं कक्षा की परीक्षा में 98.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर अपनी आसाम वैली स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इतने अधिक अंक प्राप्त करने का इस स्कूल का यह आज तक का रिकार्ड है। इसके साथ ही विज्ञान विषय में उसने पूरे आसाम में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। पथ प्रेरक की ओर से अनन्या को बधाई व उज्ज्वल भविष्य की कामना।

**कुलदीप कंवर** : सिरोही जिले के बावली गांव निवासी चंदनसिंह की पुत्री कुलदीप कंवर ने 10वीं बोर्ड सीबीएसई में 97.20 प्रतिशत अंक हासिल कर सिरोही जिले में प्रथम स्थान पाया हैं।

**भानुप्रतापसिंह** : सिरोही जिले के जे.के. पुरम में अध्ययनरत भानुप्रतापसिंह पुत्र हिम्मत सिंह देवड़ा ने (सीबीएसई) कक्षा 10वीं में 97.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

**कृष्णसिंह** : वरिष्ठ स्वयंसेवक चोलुंका निवासी शिंभुसिंह के पौत्र एवं टंवरसिंह के पुत्र कृष्णसिंह ने कक्षा 10वीं (सीबीएसई) में 94.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

**हर्षवर्धनसिंह** : चित्तौड़गढ़ जिले के मानीयास निवासी लालसिंह के पुत्र हर्षवर्धनसिंह ने कक्षा 10वीं (सीबीएसई) में 80.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

**कीर्तिसिंह** : कीर्तिसिंह भायल सुपुत्री सुरेन्द्रसिंह देवन्दी ने सीबीएसई की दसवीं कक्षा की परीक्षा में 96 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। सेंट टेरेसा स्कूल जयपुर की छात्रा कीर्तिसिंह संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक छतरसिंह देवन्दी की सुपौत्री है। बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना।

**अभिजय सिंह** : मुंबई की एल.पी.एस. स्कूल के छात्र अभिजय सिंह पुत्र कुंदनसिंह एवं निधिसिंह ने आईसीएसई बोर्ड में कक्षा 10वीं परीक्षा में 96.3 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। अभिजय वरिष्ठ स्वयंसेवक गजेन्द्रसिंह सरवड़ी का दोहिता है।

**शीतल कंवर** : मूलतः पार्वती निवासी एवं वर्तमान में निंबाहेड़ा में निवासरत दशरथ सिंह चूंडावत की पुत्री शीतल कंवर ने सीबीएसई बोर्ड की कक्षा 10वीं की परीक्षा में 89.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

**भव्या राठौड़** : सहनाली छोटी जिला चुरू निवासी मानसिंह सहनाली की पुत्री भव्य राठौड़ ने सीबीएसई बोर्ड की कक्षा 10वीं की परीक्षा में 96 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा के गणित में 100 में से 100 व विज्ञान में 100 में से 99 अंक आए है।

**वामासिंह** : रणजीतसिंह शेखावत नंगली सलेदीसिंह की पुत्री वामासिंह ने महारानी गायत्री देवी विद्यालय में अध्ययनरत रहते हुए कला वर्ग से सीबीएसई बोर्ड में 95 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। यह छात्रा संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक हणवंतसिंह नंगली की पौत्री है।

**जिन विद्यार्थियों के 10वीं एवं 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं में 80 प्रतिशत से अधिक अंक आए हैं वे अपनी फोटो सहित विवरण भेजें।**

**अमृतांशी कंवर** : पीह निवासी प्रहलादसिंह की पौत्री तथा कीर्तिवर्द्धन सिंह व शीलनिधि कंवर की पुत्री अमृतांशी कंवर ने मैयो कॉलेज में अध्ययनरत रहते हुए कक्षा 12 में 93 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

**चित्रांगदा कंवर** : लोड़ता जिला जोधपुर निवासी हुकम सिंह लोड़ता की पुत्री चित्रांगदा कंवर ने सीबीएसई की 12वीं की परीक्षा में 93.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा बीकानेर में अध्ययनरत है।

# एन.डी.ए. की प्रवेश परीक्षा में दूसरा व पांचवा स्थान

नागौर जिले के डीडवाना के पास स्थित सान्या गांव निवासी अभिमन्यु सिंह ने रक्षा सेवाओं हेतु प्रवेश परीक्षा एन.डी.ए. में पूरे भारत में दूसरा स्थान प्राप्त किया है। इनके चचेरे भाई हर्षवर्धनसिंह राठौड़ ने इसी परीक्षा में पांचवा स्थान प्राप्त किया है। दोनों भाई राष्ट्रीय मिलेट्री स्कूल के विद्यार्थी रहे हैं। दोनों की शानदार उपलब्धि पर हार्दिक बधाई।

# अभिमन्यु सिंह : पूर्व निदेशक यूनेस्को

अभिमन्यु सिंह सुपुत्र ठाकुर छतरसिंह ठिकाना हरजी जिला जालोर राजस्थान का जन्म 10 दिसम्बर 1951 को हुआ था। आपने सन् 1958 तक मैयो कॉलेज में शिक्षा ग्रहण की तथा 1971 में सेण्ट स्टीफंस महाविद्यालय दिल्ली से स्नातक की पदवी प्राप्त की। उसके उपरान्त सन् 1973 में आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से इतिहास विषय में प्रथम स्थान के साथ एम.ए. की डिग्री हासिल कर एक कीर्तिमान स्थापित किया। सन् 1974 में आप प्रतिष्ठित भारतीय प्रशासनिक सेवा (राजस्थान काडर) के अधिकारी बने। आपने बतौर हबर्ट एच हेमफ्रे फैलो के फुलब्राइट प्रोग्राम के तहत मिड कैरियर डेवेलपमेण्ट के लिए एक वर्ष (1986-87) पीटर्सबर्ग यूनीवर्सिटी के साथ अमेरिका में बिताया। दस वर्ष तक आप मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग में प्रतिनियुक्ति पर रहे। पहले पांच वर्ष (1987-92) तक आप निदेशक उच्च शिक्षा के पद पर और फिर (1995-2000) तक आप संयुक्त सचिव प्राथमिक शिक्षा रहे। आपने तीन वर्ष तक कॉमनवैल्थ ऑफ लर्निंग-वैनकावर के बोर्ड ऑफ गवर्नस में भारत का प्रतिनिधित्व किया। इसी समय के बीच सन् 1992-1995 तक आप राजस्थान सरकार के शिक्षा सचिव रहे और 'शिक्षा कर्मी और लोक जुम्बिस' परियोजना में सराहनीय कार्य किया, जिसकी वजह से राज्य में प्रौढ़ और प्राथमिक शिक्षा के स्तर में बहुत सुधार हुआ। राजस्थान में प्राथमिक कक्षा के सभी विद्यार्थियों को और कक्षा आठ तक की सभी छात्राओं को मुफ्त पुस्तकें मुहैया कराने में आपने अहम भूमिका निभाई। शिक्षा के क्षेत्र में आपके योगदान को ध्यान में रखते हुए सन् 2000 में आपको डाकर में आयोजित वर्ल्ड एज्यूकेशन फॉरम के ग्लोबल ड्राफ्टिंग कमेटी की अध्यक्षता करने का गौरव प्राप्त हुआ। सन् 2001 में आपने संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) में कार्यभार ग्रहण किया। यहां आपको पांच वर्ष तक अंतरराष्ट्रीय विकास भागीदारों की ओर से 'एज्यूकेशन फॉर ऑल' अभियान के समन्वयक और नेतृत्व की भूमिका निभाने का दायित्व सौंपा। इस गौरवशाली पद पर रहते हुए आपने वर्ल्ड बैंक की मदद से प्राथमिक शिक्षा के सर्व व्यापीकरण के लिए सराहनीय काम किया। 2006 में आप नाइजीरिया और 2008 में बीजिंग स्थित यूनेस्को कार्यालय में निर्देशक के पद पर रहे। बीजिंग में आप पहले भारतीय थे जिनको इस पद पर रहने का गौरव प्राप्त हुआ। यहां रहते आपने चीन, जापान, दक्षिणी और उत्तरी कोरिया एवं मंगोलिया यूनेस्को के निदेशक का कार्यभार संभाला। सन् 2014 में भारत लौटने पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने सर्व शिक्षा अभियान और मिड-डे मील जैसी प्रमुख योजना के क्रियान्वन की समीक्षा करने के लिए आपको आमंत्रित कर लिया। हाल ही टोक्यो विश्वविद्यालय में, 'जापान फाउण्डेशन टू स्टेडी फॉर आल' ने आपको 'रिसर्च फैलोशिप' प्रदान कर सम्मानित किया है।

**-हिम्मतसिंह पीह**

# लघुकथा : 'परमात्मा का आभार करो'

एक पुरानी सी इमारत में वैद्यजी का मकान था। पिछले हिस्से में रहते थे और अगले हिस्से में दवाख़ाना खोल रखा था। उनकी पत्नी की आदत थी कि दवाख़ाना खोलने से पहले उस दिन के लिए आवश्यक सामान एक चिट्ठी में लिख कर दे देती थी। वैद्यजी गद्दी पर बैठकर पहले भगवान का नाम लेते फिर वह चिट्ठी खोलते। पत्नी ने जो बातें लिखी होतीं, उनके भाव देखते, फिर उनका हिसाब करते। फिर परमात्मा से प्रार्थना करते कि हे भगवान! मैं केवल तेरे ही आदेश के अनुसार तेरी भक्ति छोड़कर यहाँ दुनियादारी के चक्कर में आ बैठा हूँ। वैद्यजी कभी अपने मुँह से किसी रोगी से फ़ीस नहीं माँगते थे। कोई देता था, कोई नहीं देता था किन्तु एक बात निश्चित थी कि ज्यों ही उस दिन के आवश्यक सामान खरीदने योग्य पैसे पूरे हो जाते थे, उसके बाद वह किसी से भी दवा के पैसे नहीं लेते थे चाहे रोगी कितना ही धनवान क्यों न हो।

एक दिन वैद्यजी ने दवाख़ाना खोला। गद्दी पर बैठकर परमात्मा का स्मरण करके पैसे का हिसाब लगाने के लिए आवश्यक सामान वाली चिट्ठी खोली तो वह चिट्ठी को एकटक देखते ही रह गए। एक बार तो उनका मन भटक गया। उन्हें अपनी आँखों के सामने तारे चमकते हुए नज़र आए किन्तु शीघ्र ही उन्होंने अपनी तंत्रिकाओं पर नियंत्रण पा लिया। आटे-दाल-चावल आदि के बाद पत्नी ने लिखा था, 'बेटी का विवाह 20 तारीख़ को है, उसके दहेज का सामान।' कुछ देर सोचते रहे फिर बाकी चीजों की क़ीमत लिखने के बाद दहेज के सामने लिखा, 'यह काम परमात्मा का है, परमात्मा जाने।'

एक-दो रोगी आए थे। उन्हें वैद्यजी दवाई दे रहे थे। इसी दौरान एक बड़ी सी कार उनके दवाख़ाने के सामने आकर रुकी। वैद्यजी ने कोई ख़ास तवज्जो नहीं दी क्योंकि कई कारों वाले उनके पास आते रहते थे। दोनों मरीज़ दवाई लेकर चले गए। वह सूटेड-बूटेड साहब कार से बाहर निकले और नमस्ते करके बेंच पर बैठ गए। वैद्यजी ने कहा कि अगर आपको अपने लिए दवा लेनी है तो इधर स्टूल पर आएँ ताकि आपकी नाड़ी देख लूँ और अगर किसी रोगी की दवाई लेकर जाना है तो बीमारी की स्थिति का वर्णन करें।

वह साहब कहने लगे 'वैद्यजी! आपने मुझे पहचाना नहीं। मेरा नाम कृष्णलाल है लेकिन आप मुझे पहचान भी कैसे सकते हैं। क्योंकि मैं 15-16 साल बाद आपके दवाख़ाने पर आया हूँ। आप को पिछली मुलाक़ात का हाल सुनाता हूँ। फिर आपको सारी बात याद आ जाएगी। जब मैं पहली बार यहाँ आया था तो मैं ख़ुद नहीं आया था अपितु ईश्वर मुझे आप के पास ले आया था क्योंकि ईश्वर ने मुझ पर कृपा की थी और वह मेरा घर आबाद करना चाहता था। हुआ इस तरह था कि मैं कार से अपने पैतृक घर जा रहा था। बिल्कुल आपके दवाख़ाने के सामने हमारी कार पंक्चर हो गई। ड्राईवर कार का पहिया उतार कर पंक्चर लगवाने चला गया। आपने देखा कि गर्मी में मैं कार के पास खड़ा था तो आप मेरे पास आए और दवाख़ाने की ओर इशारा किया और कहा कि इधर आकर कुर्सी पर बैठ जाएँ। अंधा क्या चाहे दो आँखें और कुर्सी पर आकर बैठ गया। ड्राइवर ने कुछ ज्यादा ही देर लगा दी थी। एक छोटी-सी बच्ची भी यहाँ आपकी मेज़ के पास खड़ी थी और बार-बार कह रही थी। 'चलो न बाबा, मुझे भूख लगी है। आप उससे कह रहे थे कि बेटी थोड़ा धीरज धरो, चलते हैं। मैं यह सोच कर कि इतनी देर से आप के पास बैठा था और मेरे ही कारण आप खाना खाने भी नहीं जा रहे थे। मुझे कोई दवाई ख़रीद लेनी चाहिए ताकि आप मेरे बैठने का भार महसूस न करें। मैंने कहा वैद्यजी मैं पिछले 5-6 साल से इंग्लैंड में रहकर कारोबार कर रहा हूँ। इंग्लैंड जाने से पहले मेरी शादी हो गई थी लेकिन अब तक बच्चे के सुख से वंचित हूँ। यहाँ भी इलाज कराया और वहाँ इंग्लैंड में भी लेकिन किस्मत ने निराशा के सिवा और कुछ नहीं दिया।'

आपने कहा था, 'मेरे भाई! भगवान से निराश न होओ। याद रखो कि उसके कोष में किसी चीज़ की कोई कमी नहीं है। आस-औलाद, धन-इज्जत, सुख-दुःख, जीवन-मृत्यु सब कुछ उसी के हाथ में है। यह किसी वैद्य या डॉक्टर के हाथ में नहीं होता और न ही किसी दवा में होता है। जो कुछ होना होता है वह सब भगवान के आदेश से होता है। औलाद देनी है तो उसी ने देनी है।' मुझे याद है आप बातें करते जा रहे थे और साथ-साथ पुड़िया भी बनाते जा रहे थे। सभी दवा आपने दो भागों में विभाजित कर दो अलग-अलग लिफाफें में डाली थीं और फिर मुझसे पूछकर आप ने एक लिफाफे पर मेरा और दूसरे पर मेरी पत्नी का नाम लिखकर दवा उपयोग करने का तरीका बताया था।

मैंने तब बेदिली से वह दवाई ले ली थी क्योंकि मैं सिर्फ कुछ पैसे आप को देना चाहता था। लेकिन जब दवा लेने के बाद मैंने पैसे पूछे तो आपने कहा था, बस ठीक है। मैंने जोर डाला, तो आपने कहा कि आज का खाता बंद हो गया है। मैंने कहा मुझे आपकी बात समझ नहीं आई। इसी दौरान वहां एक और आदमी आया उसने हमारी चर्चा सुनकर मुझे बताया कि खाता बंद होने का मतलब यह है कि आज के घरेलू खर्च के लिए जितनी राशि वैद्यजी ने भगवान से माँगी थी वह ईश्वर ने उन्हें दे दी है। अधिक पैसे वे नहीं ले सकते।

मैं कुछ हैरान हुआ और कुछ दिल में लज्जित भी कि मेरे विचार कितने निम्न थे और यह सरलचित्त वैद्य कितना महान है। मैंने जब घर जा कर पत्नी को औषधि दिखाई और सारी बात बताई तो उसके मुँह से निकला वो इंसान नहीं कोई देवता है और उसकी दी हुई दवा ही हमारे मन की मुराद पूरी करने का कारण बनेंगी। आज मेरे घर में दो फूल खिले हुए हैं। हम दोनों पति-पत्नी हर समय आपके लिए प्रार्थना करते रहते हैं। इतने साल तक कारोबार ने फ़ुरसत ही न दी कि स्वयं आकर आपसे धन्यवाद के दो शब्द ही कह जाता। इतने बरसों बाद आज भारत आया हूँ और कार केवल यहीं रोकी है।

वैद्यजी हमारा सारा परिवार इंग्लैंड में सेटल हो चुका है। केवल मेरी एक विधवा बहन अपनी बेटी के साथ भारत में रहती है। हमारी भान्जी की शादी इस महीने की 21 तारीख को होनी है। न जाने क्यों जब-जब मैं अपनी भांजी के भात के लिए कोई सामान ख़रीदता था तो मेरी आँखों के सामने आपकी वह छोटी-सी बेटी भी आ जाती थी और हर सामान मैं दोहरा ख़रीद लेता था। मैं आपके विचारों को जानता था कि संभवतः आप वह सामान न लें किन्तु मुझे लगता था कि मेरी अपनी सगी भांजी के साथ जो चेहरा मुझे बार-बार दिख रहा है वह भी मेरी भांजी ही है। मुझे लगता था कि ईश्वर ने इस भान्जी के विवाह में भी मुझे भात भरने की ज़िम्मेदारी दी है।

वैद्यजी की आँखें आश्चर्य से खुली की खुली रह गईं और बहुत धीमी आवाज़ में बोलेए 'कृष्णलाल जी, आप जो कुछ कह रहे हैं मुझे समझ नहीं आ रहा कि ईश्वर की यह क्या माया है। आप मेरी श्रीमती के हाथ की लिखी हुई यह चिट्ठी देखिये।' और वैद्यजी ने चिट्ठी खोलकर कृष्णलाल जी को पकड़ा दी। वहाँ उपस्थित सभी यह देखकर हैरान रह गए कि 'दहेज का सामान' के सामने लिखा हुआ था 'यह काम परमात्मा का है, परमात्मा जाने।'

काँपती-सी आवाज़ में वैद्यजी बोले, कृष्णलाल जी, विश्वास कीजिये कि आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि पत्नी ने चिट्ठी पर आवश्यकता लिखी हो और भगवान ने उसी दिन उसकी व्यवस्था न कर दी हो। आपकी बातें सुनकर तो लगता है कि भगवान को पता होता है कि किस दिन मेरी श्रीमती क्या लिखने वाली हैं अन्यथा आपसे इतने दिन पहले ही सामान ख़रीदना आरम्भ न करवा दिया होता परमात्मा ने। वाह भगवान वाह! तू महान है तू दयावान है। मैं हैरान हूँ कि वह कैसे अपने रंग दिखाता है। वैद्यजी ने आगे कहा, जब से होश सँभाला है, एक ही पाठ पढ़ा है कि सुबह परमात्मा का आभार करोए शाम को अच्छा दिन गुज़रने का आभार करो, खाते समय उसका आभार करो, सोते समय उसका आभार करो।

**सोशल मीडिया से संकलित**

## मैं कौन हूं...?

मेरी वीरता, मेरी धीरता देखकर
पूछता है परिचय अकसर,
कि मैं क्या हूं...? मैं कौन हूं...?
क्यूं मैं नहीं रह सकती सिसककर...?
क्यूं मैं कल्पना की उड़ान हूं? सवाल अच्छे हैं...!
दे दिया मैंने भी जवाब बातियों को संजोकर,
मैं कौम का अभिमान हूं,
मैं मां पद्मिनी का सम्मान हूं,
मैं युद्धभूमि में जंग का आह्वान हूं,
मैं जौहर की लपटों में धधकता स्वाभिमान हूं,
मैं अलाउद्दीन का राख में खाक होता अरमान हूं,
मैं तलवार की सिसकियां सुनती म्यान हूं,
मैं हाडीरानी का शीशदान हूं,
मैं रानी दुर्गावती का आत्म बलिदान हूं,
मैं डोड गेहली का पति के साथ अग्निस्नान हूं,
मैं गान्धारी को भगवान शंकर से मिला सौ पुत्रों का वरदान हूं,
मैं द्रौपदी का अपमान हूं,
मैं सुभद्रा द्वारा अर्जुन को आभास कराता क्षत्रिय धर्म का पालन हूं,
मैं उर्मिला के त्याग, वैराग्य का उपेक्षित जीवन जीकर भी होती महान हूं,
मैं रानी बाई के अग्नि में समर्पित हो क्षात्र परम्पराओं का निर्वहन हूं,
मैं सुप्यारदे सोठी जी की पति परायण धर्म हूं,
मैं सती माता रूपकंवर के सतीत्व का अनूठा उदाहरण हूं,
मैं इतिहास की अमूल्य बातियों को संजोने में अविस्मरणीय योगदान हूं,
मैं धीरता का वीरता से मिलान हूं,
मैं क्या हूं...? मैं कौन हूं...?
मैं रूपवती हूं, मैं गुणवती हूं, मैं मां दुर्गा की शक्ति हूं,
मैं प्राणों की आहुति देती कर्मावती हूं,
मैं सतीत्व की उज्जवल रवानी हूं,
मैं मदालसा देवी के नेतृत्व की अमर कहानी हूं,
मैं मौं पद्मिनी संग हजारों रानियों के सुकोमल अंगों की निशानी हूं,
मैं पीढियों को पाठ पढाती परम्परा बलिदानी हूं,
मैं पथविमुख होते चूंडा को जंग जीत का आशीष देती हाडीरानी की सैनाणी हूं,
मैं युद्ध भूमि से हारकर लौटने पर महाराजा के लिए दरवाजा खोलने की मनाही करती जसवन्त दे हाडी राणी हूं,
मैं ईश्वरीय प्रेम में मन्त्रमुग्ध मीरा मेडतणी हूं,
मैं दो-दो कुलों की लाज ढोती उमादे रूठी राणी हूं,
मैं वीर दुर्गादास की परवरिश करती मां नेतकंवर भटियाणी हूं,
मैं क्षत्राणी हूं...! मैं क्षत्राणी हूं...!

- सुमन बेदाना

## नीरसिंह सिंघाणा को पितृशोक

संघ के महाराष्ट्र संभाग के संभाग प्रमुख नीरसिंह सिंघाणा के पिता **जीवणसिंह** का 14 मई को देहावसान हो गया। पथ प्रेरक दिवंगत आत्मा की शांति एवं शोकग्रस्त परिवार को संबल हेतु परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

## माधोसिंह को पुत्र शोक

संघ के स्वयंसेवक माधोसिंह देदुसर के पुत्र **छोटुसिंह** का 12 मई को देहावसान हो गया। छोटुसिंह 12वीं कक्षा का विद्यार्थी था। पथ प्रेरक दिवंगत आत्मा की शांति एवं शोकग्रस्त परिवार को संबल हेतु परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

## गोविन्द सिंह पाटोदा का देहावसान

अपने जीवन के प्रारम्भिक दिनों में पूज्य तनसिंह जी के सम्पर्क का लाभ लेने वाले एवं अक्टूबर 1948 में जोधपुर विशेष शिविर में संघ से जुड़े **गोविन्दसिंह पाटोदा** का विगत 5 मई को देहावसान हो गया। पथ प्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

# विद्यार्थियों के लिए

10 वीं एवं 12वीं कक्षा के परिणाम आ रहे हैं। समाज के अनेक विद्यार्थियों ने प्रशंसनीय अंक हासिल किए है। अनेक विद्यार्थी अंकों की दौड़ में भले ही पिछड़े हो लेकिन उनके अन्दर श्रेष्ठ की संभावनाएं विद्यमान है। 10वीं एवं 12वीं कक्षा विद्यार्थी जीवन का महत्वपूर्ण मोड़ होती है। 10वीं के बाद जहां आगे के अध्ययन की दिशा तय करनी होती है वहीं 12वीं विद्यालयी शिक्षा की पूर्णाहूति होती है। इन महत्वपूर्ण मोड़ों पर निर्णय करने से पूर्व राजपूत विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण बात यह होती है कि वे जो भी निर्णय लें अपने आपको पहचान कर लें। उन्हें अपने आपका आकलन करते समय उनके जीवन के सबसे महत्वपूर्ण पक्ष 'रजपूती' पर अवश्य विचार करना चाहिए। उन्हें समझना चाहिए कि रजपूती परम्परा में जन्म तो उन्हें प्रारब्ध वश मिल गया है और उस परम्परा का अपने जीवन में प्रकटीकरण उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि हो सकती है क्यों कि आज संसार की परिस्थितियों में 'रजपूती' की मांग सर्वाधिक है और पूर्ति न्यून। मांग और पूर्ति का सिद्धान्त इस अवस्था में आज के जमाने में रजपूती को सर्वाधिक कीमती बनाता है। क्योंकि आज के जमाने की परिस्थितियों में न्याय, सत्य, जवाबदेही, उत्तरदायित्व वहन, ईमानदारी, कर्मशीलता, विश्वास आदि की सर्वाधिक आवश्यकता है और ये सभी रजपूती में समाहित है। इसीलिए भारत को निकटता से जानने वाला हर संजीदा व्यक्ति यह चाहता है कि राजपूत इस राष्ट्र के शासन, प्रशासन एवं व्यवस्था की मुख्य धारा में आए। ऐसे में आज के राजपूत विद्यार्थियों को दोहरी मेहनत करने की आवश्यकता है। उसे न्याय, प्रशासन, पुलिस, राजनीति आदि देश की व्यवस्था के सभी मुख्य पक्षों की धूरी बनने के लिए अन्य सभी के साथ प्रतियोगिता करते हुए अतिरिक्त मेहनत करनी है और साथ ही अपनी रजपूती को जागृत रखना है। रजपूती के अभाव में यदि हम राष्ट्र की व्यवस्था के सभी पक्षों में धूरी बन जाए तो भी कोई अर्थ नहीं रह जाता क्योंकि फिर अन्यों में और हमारे में कोई फर्क नहीं रह जाता। यदि बिना किसी फर्क के अन्यों के जैसे बनकर ही हम भी इस व्यवस्था के अंग बनते हैं तो कोई विशेषता की बात नहीं है। व्यवस्था का सफल संचालन व्यक्ति बदलने से नहीं बल्कि वृत्ति बदलने से होता है और आज राजपूत व्यक्ति की नहीं बल्कि रजपूती वृत्ति वाले व्यक्ति की आवश्यकता है और उसके विकास की सर्वाधिक संभावना है राजपूत व्यक्ति में है इसलिए राष्ट्र को जानने वाला राष्ट्र का संजीदा वर्ग आपकी ओर देखता है। इसलिए पहली आवश्यकता हमारे में बैठी रजपूती को निखारने की है। लेकिन निखरी हुई रजपूती यदि व्यवस्था का नियामक नहीं बन पाती है तो फिर वह उतनी प्रभावी नहीं हो पाएगी। इसलिए दूसरी आवश्यकता है कि वह वर्ग जिसमें रजपूती के स्वाभविक प्रकटीकरण की सर्वाधिक संभावना है वह इस देश की व्यवस्था का नियामक बने। वह राष्ट्र के प्रशासन की धूरी बन चुकी प्रशासनिक सेवाओं में अपनी दमदार उपस्थिति बनाए। वह कानून व्यवस्था संभालने वाले पुलिस प्रशासन का सिपाही ही नहीं बल्कि अफसर बनें क्यो कि सिपाही तो हुकम का तावेदार होता है। वह डॉक्टर बने, इंजीनियर बने लेकिन इसमें भी ज्यादा आवश्यकता यह है कि वह डाक्टर और इंजीनियर का नियामक बने। उनको चलाने वाली व्यवस्था की धूरी बने। यह सब इसलिए ही नहीं बने कि उसको अपना परिवार पालना है, जीवन निर्वाह करना है बल्कि इसलिए बने कि यह उसके जीवन लक्ष्य की ओर प्रवाहित करने के लिए आवश्यक है। इसलिए विद्यार्थी जीवन के इस महत्वपूर्ण मोड़ पर आप सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि अपना चुनाव करते समय सदैव इस बात का ध्यान रखें कि रजपूती इस राष्ट्र की आवश्यकता है, ईश्वरीय विधान की आवश्यकता है और परमेश्वर ने मुझे इसके लिए सर्वाधिक उपयुक्त परम्परा में जन्म दिया है इसलिए मैं अपने आपको राजपूत बनाने की प्राथमिकता के साथ राष्ट्र की व्यवस्था की धूरी बनने की ओर प्रवृत्त होऊं। परमेश्वरीय विधान में सहायक होने का हमारी संकल्प ही हमें उसकी सहायता एवं सहयोग उपलब्ध करवाएगा।

## अभिमन्युसिंह बने ब्रिटेन में काउंसलर

उज्जैन जिले के रोहल खुर्द गांव के मूल निवासी अभिमन्यु सिंह राणावत ब्रिटेन के हल शहर के काउंसिल चुनाव में एवेन्यू सीट से लेबर पार्टी के उम्मीदवार के रूप में काउंसलर चुने गए हैं।

## प्रहलादसिंह पीह को राव सीहा सम्मान

जोधपुर के 561वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर 12 मई को मेहरानगढ़ में आयोजित कार्यक्रम में मारवाड़ रत्न सम्मान के तहत प्रहलाद सिंह पीह को राव सीहा सम्मान के तहत एक प्रशस्ति पत्र, अंगवस्त्र, श्रीफल, एक लाख रुपए नकद एवं स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। श्री पीह को पथप्रेरक परिवार की हार्दिक बधाई।

# सिंगोली में सामूहिक विवाह

मेवाड़ के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल सिंगोली चारभुजा में 6 मई को राजपूत समाज का 10वां सामूहिक विवाह सम्मेलन संपन्न हुआ जिसमें 78 युगल परिणय सूत्र में बंधे। मेवाड़ क्षत्रिय महासभा के जिलाध्यक्ष एवं पूर्व विधायक प्रदीप कुमार सिंह के नेतृत्व में 2010 से प्रतिवर्ष सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन किया जा रहा है। अब तक 969 युगल इन सम्मेलनों में परिणय सूत्र में बंध चुके है। प्रातः 6 बजे पंजीयन, 9 बजे तोरण एवं 10 बजे वेद संस्थान बरूदनी के संस्थापक पंडित बदरी नारायण के निर्देशन में विवाह के सभी रश्में पूर्ण की गई। 1 बजे आयोजित आशीर्वाद समारोह में पूर्व विधायक प्रदीप कुमार सिंह, जिला प्रमुख शक्तिसिंह हाड़ा, मांडलगढ़ विधायक गोपाल खंडेलवाल, चन्द्रवीरसिंह जगपुरा, राव यज्ञ नारायणसिंह, संयोजक कुलदीपसिंह, जगनमोहन नामकर, दिलीपसिंह बड़लियास, मधु कंवर राठौड़ आदि ने अपने विचार व्यक्त किए एवं वर-वधु को आशीर्वाद प्रदान किया। विवाह में वर-वधु को सोने-चांदी के आभूषणों सहित 39 उपहार दिए गए।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष: 2466353 व 2466387) से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com , Web site:- www.shrikys.org